

कैसा दुःखी रिवाज है कि जिने जीने
नी तन हाँकने को बीथता मी । तिले
उसे मरने पर वरा कफन यादिल ।

जिरी समाज व तौलत पजतत है ,
जु है मनुष्य क नील उर क बंदा । उण्ड
ओर तिमटा स तौलत राता है । नी पण
पण पर प्रतीम में क उण्ड । विहा दुसा है
और समाज की कव्यवस्था उण्ड से दुसा
हैष उण्डण और जीता तपसा को
उण्डसालि और जानी नै है ।

मनुष्य क समाज वा दौण्ड में बँदा राता
है । बँदा हिस्सा ही जदने और रापणे कातो
का है, उण्ड उण्ड ही छोटा हिस्सा । उण्ड
का, जो उण्ड ही शक्ति और राता है ।
उण्डराय की काने बस में उण्डे हरे है । उण्डे
राता है । राता किसी बस में उण्डे हरे है ।
राता है । राता किसी बस में उण्डे हरे है ।
राता है । राता किसी बस में उण्डे हरे है ।
राता है । राता किसी बस में उण्डे हरे है ।
राता है । राता किसी बस में उण्डे हरे है ।